

'कोई लौटा दे मेरे बचपन के दिन'

दमोह(आरएनएन)। हमें आगे बढ़ना है, भारत को और आगे ले जाना है। भारत को 12 वीं शताब्दी में नहीं 21 वीं शताब्दी में ले जाना है। ये भारत की संस्कृति है और ये बुंदेलखंड की माटी है, जिसे मैं माथे से लगाने आया हूँ। ये विचार विश्व विख्यात चित्रकार सैयद हैदर रजा ने लोहिया उद्यान पार्क में आयोजित आत्मीय चर्चा के दौरान रखे।

नगर में पले-बढ़े सैयद हैदर रजा का गत दिवस नगर आगमन हुआ। उनके सम्मान में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। रजा जी अपने कार्यक्रम के अनुरूप सुबह से फुटेरा वार्ड स्थित पैतृक मकान में गए जहां पर उन्होंने अपनी स्मृतियों को याद किया व बचपन में सबसे अधिक समय उन्होंने फुटेरा तालाब के समीप ही व्यतीत किया। इस क्षण को याद करते हुए उन्होंने कुछ समय नंदी की प्रतिमा के समक्ष व्यतीत किए व भोलेनाथ जी के मंदिर में श्रीफल अर्पित किया।

सर्व धर्म को मानने वाले कौमी एकता के प्रतीक रजा ने कहा कि ये सब देव कृपा है जिनकी बदौलत मुझे मार्गदर्शन मिला। उन्होंने कहा कि 55 वर्ष फ्रांस में रहने के बावजूद भी आज भी भारतीय नागरिक हूँ। लोग विदेश जाकर अंग्रेज बनकर लौटते हैं, लेकिन मैं भारतीय बनकर लौटा हूँ।

तदुपरांत रजा साहब फुटेरा वार्ड स्थित गुरुगोविंद प्राथमिक शाला पहुंचे जहां पर उन्होंने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई पूर्ण की थी।



उन्होंने छात्र-छात्राओं से मिलकर अपने अतीत की चर्चा की व जीवन में गुरु के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही गुरु की स्मृति में स्व. बेनीप्रसाद स्थापक रजा चित्र संग्रहालय का

विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत की रजा ने

शुभारंभ फीता काटकर किया। दोपहर में सद्भाव परिवार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन प्रसंगों को सभी के समक्ष रखा, जिससे कला

जगत के जानने वालों को प्रेरणा मिल सके। रजा प्रसंग कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वधर्म के प्रतीकों के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ।

कार्यक्रम के आकर्षण रजा का स्वागत अभिनंदन पत्र व शाल-श्रीफल से किया गया। साथ ही रजा साहब को अलंकरण, कला वस्त्रम, पुष्पस्तवक व स्टार पेंटर द्वारा उन्हीं का चित्र बनाकर भेंट किया गया। राष्ट्रीय युवा नाट्य मंच के कलाकारों द्वारा 1857 की क्रांति को लेकर गीत प्रस्तुत किया गया। प्रसिद्ध शायर नैय्यर दमोही ने शेरों के माध्यम से कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। सत्यमोहन वर्मा द्वारा अभिनंदन पत्र का वाचन किया गया।

कार्यक्रम में फिल्मी गीतकार विट्ठल भाई पटेल, विजय मलैया, भारत भवन भोपाल से हरिचंदन भट्टी, कामता सागर, डा. जितेंद्र हेनरी, श्रीमती शीला लाल, नरेंद्र दुबे, दर्शन सिंह वाधवा, मनोहर काजल, श्रीमती आभा भारती, संतोष भारती, रघुनंदन चिले, राज सैनी के साथ कला जगत से संबंध रखने वाले व गणमान्य नागरिकों की विशेष उपस्थिति रही।

स्थानीय छायाकारों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अजीत श्रीवास्तव व आभार संतोष भारती ने माना। सैयद हैदर रजा 85 वर्ष के हो चुके हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है। कालीदास सम्मान के साथ-साथ लोक कला अकादमी नई दिल्ली से मानद सदस्य के रूप में मनोनीत हैं।



नई दुनिया

इंदौर

सिटी

रंग, रूप-वसंत और रजा...

इंदौर। मशहूर चित्रकार सैयद हैदर रजा की यह खासियत है कि जब भी वे भारत आते हैं तो युवा चित्रकारों के सृजन को जरूर देखते हैं। शहर के इन 11 चित्रकारों के लिए यह खास मौका था जब रजा ने उनके चित्रों को देखने के बाद, उन पर अपनी राय व्यक्त की। रजा साहब का ध्यान हर कलाकृति को देखने के बाद उसकी खूबसूरती और खासियत को बर्णन करने था। उन्होंने हर कलाकार के लिए ऐसी ही बात कही, जिससे उसका हौसला बढ़े।

यह मौका था सयाजी क्लब में रविवार से शुरू हुई चित्रकला प्रदर्शनी 'रूप-वसंत' का। शहर के युवा चित्रकारों की कृतियों से सजी इस तीन दिनों प्रदर्शनी को

इंदौर आते पर रजा साहब ने कुछ इस तरह अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

शुभारंभ रजा साहब के हस्ते हुआ। विजित शर्मा, मोनिका सोलंकी, ऋतु गुर्जर, राहुल सोलंकी, शबनम शाह, अमित म्हात्रे, जितेंद्र व्यास, सतीश भैसारे, पीयूष शर्मा, मोहित भाटिया और विशाल जोशी ने अपने 'अमूर्त' शैली के चित्रों को यहाँ प्रदर्शित किया है। इंदौर स्कूल के इन चित्रकारों की खासियत यह है कि उनके चित्रों में व्याख्या यानी नरेटिव फिगर्स नहीं मिलते। मूर्त के बजाए ये चित्रकार रंगों और उनके शेड्स में ज्यादा सृजन करते हैं।

खासियत इंदौर स्कूल की

दिल्ली से इस प्रदर्शनी के लिए विशेष तौर पर आए चित्रकार श्री मोहन मालवीय कहते हैं, 'युवाओं को जितना प्रोत्साहन रजा साहब से

मिलता है, उतना किसी और से नहीं मिलता।' रूप-वसंत में

चित्र प्रदर्शित कर रही चित्रकार

सुश्री शबनम शाह कहती हैं,

'हम सभी ने मुक्त होकर बनाई

गई कृतियों को यहाँ प्रदर्शित

किया है। हर स्कूल की कृतियों

में कुछ न कुछ समानता

दिखाई दे जाती है, लेकिन

इंदौर स्कूल की यह खासियत

रही है कि यहाँ हर तरह का

कार्य होता है।' प्रदर्शनी में

सुश्री शाह ने काले रंग के

शेड्स के साथ रंगे चित्र रखे हैं।

श्रीमती मोनिका सोलंकी ने

जहाँ मोनोप्रिंट की अलग तरह

की शैली में बनाए चित्र रखे

हैं, वहीं अमित म्हात्रे ने हरे रंग

के शेड्स को खूबसूरती से

कैनवास पर उतारा है। राहुल

सोलंकी की कृति में पेपर

कोलाज, जबकि पीयूष शर्मा के

चित्र में विशुद्ध अमूर्त शैली

नजर आती है।

साठ साल पुरानी कृति

प्रदर्शनी के शुभारंभ के बाद डॉ.

प्रकाश छजलानी ने रजा साहब

को उनकी एक कृति दिखाई जो

उन्होंने वर्ष 1948 में डॉ.

छजलानी के परिवार को भेंट में

दी थी। अपने इस पुराने चित्र

को देखकर रजा साहब बेहद

खुश हुए और उस पर अपने

हस्ताक्षर भी किए।

ALLOY WHEELS

अलाय व्हील्स

- सभी साइजों में उपलब्ध
- 12" से 17" तक रेडी र्टॉक
- विशाल रेंज में डिजाइन्स
- सस्ते, सुंदर व बढ़िया क्वालिटी

KUNAL 97554 54000



जवाँ दिनों की यादें तलाशते बूढ़े रजा

● कपिल पंचोली

इंदौर। बचपन में एक मर्तबा मैं अपने प्राइमरी स्कूल की दीवार पर बने बिंदु को चार दिनों तक लगातार देखता रहा, यहाँ बिंदु से मेरा पहला परिचय था। तब से अब तक मैं बिंदु पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ। और जहाँ तक रंगों की बात है तो उसकी जगह मेरे जेहन में पहले ही तय हो जाती है। रंग मुझसे बातें करते हैं। वे बता देते हैं कि कैनवास पर मेरी जगह फलों कोने में है। ऐसा तब होने लगता है जब आप अपने काम से प्रेम करने लगते हैं उसमें रम जाते हैं उसे अपना जीवन बना लेते हैं।

ख्यात चित्रकार सैयद हैदर रजा बिलकुल इसी तरह की यादों को दुहराते हैं। इंदौर में युवा कलाकारों की चित्र प्रदर्शनी 'रूप-वसंत' के शुभारंभ से पहले उनसे हुई संक्षिप्त चर्चा में इस अद्भुत अमूर्त चित्रकार ने कहा कि प्रेम, ईश्वर और कला तीनों ही ऐसी दुनिया हैं जिसमें खोने वाला खुद को पा लेता है। रजा का कहना है कि मन की एकाग्रता तीनों ही जगह जरूरी है। अगर आप किसी एक ही स्त्री को आई लव यू कहते हैं तो आपको प्रेम करना आता है और अगर आप योजना दसियों स्त्रियों के सामने प्रेम प्रस्ताव रखते हैं तो आपको प्रेम का मतलब ही नहीं मालूम है। कला में जो लोग दो या तीन सालों में सबकुछ पाने की तमन्ना रखते हैं उन्हें मैं बस इतना ही कहता हूँ कि रजा को 30 साल लगे तब वह जान पाया कि रंग-चयन और उसका स्थान क्या मायने रखता है। तो मेरे दोस्तों, तुम्हें यह बात 1 साल में कैसे समझ आ सकती है।

धड़कन न सुनूँ तो कैसे रहूँगा

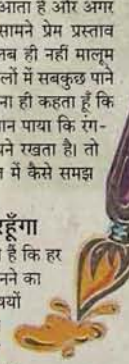
भारत यात्रा की बात पर रजा कहते हैं कि हर यात्रा मुझे विषय और तत्व को जानने का मौका देती है। पश्चिम ने मुझे विषयों को अभिव्यक्त करना सिखाया और ये विषय मैंने अपने देश की मिट्टी से उठाए हैं। मैं लगातार भारत यात्रा यहाँ जिंदगी को पीने के लिए करता हूँ। क्या करूँ, यहाँ के पानी में जो स्वाद है वह तो फ्रांस क्या दुनिया के किसी कोने में नहीं मिलता।

रजा जो कुछ भी कहते हैं उसके पीछे उनका रंगों और उनके सारे जीवन को समझने का भाव ही व्यक्त होता है। कुण्डलिनी, तपोवन, बिंदु, निधि और इसी तरह के कुछ चित्रों के जरिए रजा रंगों की दुनिया में आध्यात्मिक यात्राएं कर लेते हैं। और वाकई अगर

यह कलाकार उम्र के इस पड़ाव पर आध्यात्मिक नहीं होता तो उसे गार्बियो (दक्षिण फ्रांस) से नर्मदा की याद खींचकर कभी नहीं लाती। रजा को आज भी नरसिंहपुर, मंडला और दमोह में बिखरी स्मृतियाँ अपनी ओर खींचती हैं। वे कहते भी हैं कि मध्यप्रदेश तो भारत की धड़कन है और अगर मैं यह धड़कन नहीं सुनूँ तो मैं रह नहीं सकता।

दुबारा भी रजा ही होना चाहता हूँ

वे बताते हैं कला को खुद की अंतर्दृष्टि के खुल जाने के साधन के बतौर देखा जाना चाहिए। रजा बताते हैं कि उनके गुरु मास्टर नंदलालजी, बेनीप्रसादजी और दरियावसिंह राठौड़ के प्रति उनके मन आज भी पूरा आदर भाव है क्योंकि इन्हीं से उन्होंने कला को देखने की दृष्टि पाई है। रजा युवा कलाकारों को संदेश भी देते हैं कि 2-3 सालों के काम में यह मत समझिए कि हमें सबकुछ आ गया है। अमूर्त चित्रकारी एकाग्रता माँगती है। यह सरल नहीं है, कठिन काम है। रजा को जो बात दूसरे ख्यातनाम चित्रकारों से अलग करती है वह यह है कि वे हमेशा अच्छा देखते हैं जो दिल को दुखाने वाला हो वे उस पर कभी ध्यान नहीं लगाते। शायद ऐसा करके ही वे अपनी ऊर्जा बचाए रखते हैं और उसे सृजन में लगाते हैं। वे ऐसे खुशमिजाज कलाकार हैं जिन्हें बातें करना बेहद सुहाता है। यह उनके लिए पसंदगी का ही सबूत है कि उनके जन्मदिन पर दिल्ली में 'आर्ट अलाइव' सात दिवसीय जलसा करती है। वे अपनी पत्नी जेनील मैगलेंट की कमी भी महसूस करते हैं और प्रसन्न हैं रजा-मैगलेंट का व्हेडेशन शायद पत्नी की स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए ही काम कर रही है। रजा भरपूर जिंदगी जी रहे हैं और दूसरा जीवन मिले तो वे रजा बनकर ही जन्म लेना चाहते हैं।



रविवार से शुरू हुई चित्रकला प्रदर्शनी 'रूप-वसंत' में एक चित्रकार की कृति पर अपनी राय रखते रजा साहब।